वीतराग शासन जयवंत हो

卐 श्री आदिनाथाय नमः 卐

आदि धर्म प्रवर्तक, चमत्कारक

श्री आदिनाथ महामण्डल विधान

विधान मण्डल

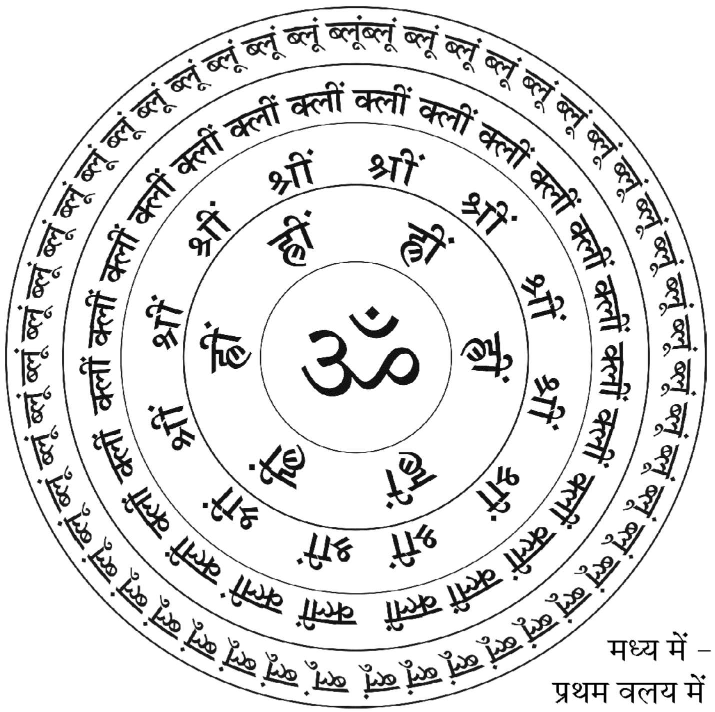

मध्य में - ॐ
प्रथम वलय में - ६
द्वितीय वलय में - १२
तृतीय वलय में - २४
चतुर्थ वलय में - ४८
कुल अर्घ = ९०

-: रचियता :-

परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री १०८ विशदसागर जी महाराज

कृति - आदि धर्म प्रवर्तक, चमत्कारक श्री आदिनाथ महामण्डल विधान

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - सप्तम, 2026

प्रतियाँ - 1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
मुनि श्री 108 विभोरसागर जी महाराज
मुनि श्री विलक्ष्य सागर जी महाराज
मुनि श्री विपिन सागर जी महाराज

सहयोग - आर्यिका श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती

संपादन - ब्र. आस्था दीदी 9660996425

संयोजन - ब्र. प्रदीप भैया 7868840873

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जैन सेठी, शांतिनगर 9413336017 जयपुर
2. हरीश जैन दिल्ली 9136248971
3. श्री दि. जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी रेवाड़ी 09416882301
4. नीरज जैन लखनऊ 9451251308
5. राजेश जैन खाकरोट वाले अंजनीनगर इंदौर 9425316972

पुनः प्रकाशन हेतु - 100/-

स्व. श्रीमान कमल चन्द जी काला की
पुण्य स्मृति में
राजरानी (धर्मपत्नी), कैलाशचन्द-पुष्पा (भाई भाभी)
पुष्पेंद्र (रिंकू)-सोनिया, पुनीत-दिव्या, कुणाल-स्वाति (पुत्र-पुत्रवधु)
सुविधा-नवीन सेठी (पुत्री-दामाद) दर्श, पारखी, निपुण
अंश (पौत्र-पौत्री) आशीष (दोहिता)
एवं समस्त काला परिवार चंदलाई मो. न. 9314063303

लघु विनय पाठ

दोहा

पूजा विधि से पूर्व यह ,पढें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव जी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनंत चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीडाहारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के,शिव पद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भव सिंधु में, एक आप आधार।
कर्म बंध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना ,से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिंब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलिम् क्षिपेत्)

शुद्धाऽशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाये।।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए ।।

(यदि अवकाश हो तो यहां पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें।)

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्र नामेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग,करणानुयोग,चरणानुयोग,द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्त्वार्थसूत्र दशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनंत चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।।
तीनलोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगल कारी भगवान।
भावशुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।

निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!।
हे अर्हंत! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलंबन।
होकर के एकाग्र चित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल पाठ

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शान्ती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान्।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निष्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व-पर कल्याण।।1।।

ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौ भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान्।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मनबल वचन कायबल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।

भेद आठ औषधि ऋद्धी के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

लघु मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना

दोहा

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमाकृत्रिम बिंब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलहकारण का हृदय, आह्वानन् शत् बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..........सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत, विद्यमान विंशति जिन,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहसनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थ क्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड गणधरादि मुनि, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सखी छंद

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों मय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सिम करो, कर दो यह उपकार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- जैनधर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

ज्ञानोदय छंद

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यंतर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान्।।3।।
मध्यलोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध हैं इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि पे, नंदीश्वर हैं मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुंडल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान्।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा

सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहे हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.........सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत, विद्यमान विंशति जिन,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्रनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थक्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड गणधरादि जयमाला अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

दोहा

जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री आदिनाथ स्तवन

ज्ञानोदय छंद

तीन लोक के ज्ञाता जिनवर, वीतराग पद धारी हैं।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, निजानंद अविकारी हैं।।
आदि ब्रह्म आदीश आदि जिन, आदि सृष्टि के कर्त्ता।
नमन् करूँ अरहंत प्रभु को, मुक्ति वधु के जो भर्ता।।१।।

वृषभनाथ है नाम आपका, वृषभ चिन्ह के धारी हैं।
वृषभ धर्म को पाने वाले, आतम ब्रह्म विहारी हैं।।
अषि मषि कृषि वाणिज्य कला अरूँ, शिल्प कला के दाता हैं।
जगती को आलोकित करते, जग के भाग्य विधाता हैं।।।२।।

कर्मभूमि के अधिनायक प्रभु, जग के करूणाकारी हैं।
जिनवाणी के अधीपति शुभ, तीर्थंकर अवतारी हैं।।
हे परम शांत! पावन पुनीत, हे कृपा सिंधु! करुणा निधान ।
हे ऋषभदेव तव चरणों में ममभाव सहित शत्-शत् प्रणाम्।३।।

हे महिमा ! मण्डित गुण निधान , हे अक्षय ! जीवन ज्योतिधाम।
हे मोक्ष पंथ ! के उन्नायक प्रभु, जन जन के अमृत ललाम् ।।
हे अजर अमर सृष्टि कर्त्ता ! हे परम पिता! हे परम ईश!
हे आदि विधाता! युग दृष्टा, हे मुक्ति पथ पंथी मुनीश!।।।४।।

तुम इन्द्रिय मन को जीत लिए, प्रभु जी जितेन्द्रिय कहलाए।
निज चेतन रस में लीन हुए, आतम स्वरूप को प्रभु ध्याए।।
हे जग उद्धारक! जगत पति, हे जिनवर! आदीश्वर स्वामी! ।
सब बोल रहे हैं जयकारा, हे ऋषभ देव अंतर्यामी !।।।५।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री आदिनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्त शरण में आकर के प्रभु, करते उर से आह्वानन।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

शंभू छंद

क्षीर नीर सम जल अति निर्मल, रत्न कलश भर लाए हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, तव चरणों में आए हैं।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनि की गंध मनोहर, मन मयूर प्रमुदित करती।
भव आताप निवारण करके, सरल भावना से भरती।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ जी अष्टापद से, अक्षय निधि को पाए हैं।
अक्षय निधि को पाने हेतु, अक्षय अक्षत लाए हैं।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर जीवन की कलिका, क्षण-क्षण में मुरझाती है।
काम वेदना नशते मन की, चंचलता रुक जाती है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री आदि प्रभु ने, एक वर्ष उपवास किए।
त्याग किए नैवेद्य सभी वह, क्षुधा वेदना नाश किए।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीपक जगमग जलकर, बाहर का तम हरता है।
ज्ञान दीप जलकर मानव को, पूर्ण प्रकाशित करता है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला में जलकर, हमने संसार बढ़ाया है।
प्रभु ने तप अग्नी में कर्मों की, शुभ धूप से धूम उड़ाया है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महामोक्ष सुख से हम वंचित, मोक्ष महाफल दान करो।
श्रीफल अर्पित करता हूँ प्रभु, शिव पद हमें प्रदान करो।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश करो प्रभु, अष्ट गुणों को पाना है।
अर्घ्य समर्पित करता हूँ प्रभु, अष्टम भूपर जाना है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य (शंभू छंद)

दूज कृष्ण आषाढ़ माह की, मरुदेवी उर अवतारे।
रत्नवृष्टि छह माह पूर्व कर, इन्द्र किए शुभ जयकारे।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, नगर अयोध्या जन्म लिया।
नाभिराय के गृह इन्द्रों ने, आनंदोत्सव महत् किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, राग त्याग वैराग्य लिया।
संबोधन करके देवों ने, भाव सहित जयकार किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन वदी एकादशी को प्रभु, कर्म घातिया नाश किए।
लोकोत्तर त्रिभुवन के स्वामी, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी को, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
सुर नर किन्नर विद्याधर ने, आकर किया विशद गुणगान।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, दीपक लिया प्रजाल।
आदिनाथ भगवान की, गाते हैं जयमाल।।

शंभू छंद

सुर नर पशु अनगार मुनि यति, गणधर ऋषि ध्यान लगाते हैं।
श्री आदिनाथ भगवान आपकी, महिमा भक्तामर गाते हैं।।
जो चरण वंदना करते हैं, वे सुख-शांति को पाते हैं।
जो पूजा करते भाव सहित, उनके संकट कट जाते हैं।।1।।

तुमने कलिकाल के आदि में, तीर्थंकर बन अवतार लिया।
इस भरत भूमि की धरती पर, आकर तुमने उपकार किया।।
जब भोगभूमि का अंत हुआ, लोगों को यह आदेश दिया।
षट्कर्म करो औ कष्ट हरो, जीवों को यह संदेश दिया।।2।।

तुमने शरीर निज आतम के, शाश्वत स्वभाव को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, चेतन स्वरूप पहिचाना है।।
तुमने संयम को धारण कर, छह माह का ध्यान लगाया है।
ले दीक्षा चार सहस्त्र भूप, उनको भी वन में पाया है।।3।।

जब क्षुधा तृषा से अकुलाए, फल फूल तोड़ने लगे भूप।
तब हुई गगन से दिव्य गूंज, यह नहीं चले निर्ग्रंथ रूप।।
फिर छाल पात कई भूपों ने, अपने ही तन पर लपटाईं।
तब खाने-पीने की विधियाँ, उन लोगों ने कई अपनाईं।।4।।

जब चर्या को निकले भगवन्, तब विधि किसी ने न जानी।
छह सात माह तक रहे घूमते, आदिनाथ मुनिवर ज्ञानी।।
राजा श्रेयांस ने पूर्वाभास से, साधु चर्या को जान लिया।
पड़गाहन करके आदिराज को, इच्छुरस का दान दिया।।5।।

विधि दिखाकर आदि प्रभु ने, मुनिचर्या के संदेश दिए।
अक्षय हो गई अक्षय तृतीया, देवों ने पंचाश्चर्य किए।।
प्रभुवर ने शुद्ध मनोबल से, निज आतम ध्यान लगाया है।
चउ कर्म घातिया नाश किए, शुभ केवलज्ञान जगाया है।।6।।

देवों ने प्रमुदित भावों से, शुभ समवशरण था बनवाया।
सौधर्म इन्द्र परिवार सहित, प्रभु पूजन करने को आया।।
सुर-नर पशुओं ने जिनवर की, शुभ वाणी का रसपान किया।
श्रद्धान ज्ञान चारित पाकर, जीवों ने स्व-पर कल्याण किया।।7।।

कैलाश गिरि पर योग निरोध, करके कर्मों का नाश किया।
फिर माघ कृष्ण चौदश को प्रभु ने, मोक्ष महल में वास किया।।
तब निर्विकल्प चैतन्य रूप, शिव का स्वरूप प्रभु ने पाया।
अब उस पद को पाने हेतु, प्रभु विशद भाव मन में आया।।8।।

जो शरण आपकी आता है, वह खाली हाथ न जाता है।
जो भक्तिभाव से गुण गाता, वह इच्छित फल को पाता है।।
हम भक्त बनें चरणों आये, हे नाथ! कृपा हम पर कीजे।
हम बने मोक्ष पद के राही, प्रभू चरण शरण में ले लीजे।।9।।

(आर्या छन्द)

हे दीनानाथ ! तुमको प्रणाम, हे ज्ञानसरोवर ! मुक्ति धाम।
हे धर्म प्रवर्तक ! तीर्थंकर, शिव पद दाता तुमको प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आदिनाथ को आदि में, कोटि-कोटि प्रणाम।
'विशद' सिंधु भव सिंधु से, पाऊँ मैं शिवधाम।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(प्रथम वलयः)

षटकर्मों का दे गये, आदिनाथ उपदेश ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने निज स्वदेश ।।
(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्त शरण में आकर के प्रभु, करते उर से आह्वानन।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

ताटंक छंद

कल्पवृक्ष जब लुप्त हुए तो, नर पशु व्याकुल हुए विशेष ।
भोग भूमि के अन्त में प्रभुजी, 'असि कर्म' का दे संदेश।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।१।।

ॐ ह्रीं असि कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कमी धान्य की हो जाने पर, छीना झपटी हुई विशेष।
बँटवारा कर शांत किए वह, 'मसि कर्म' का दे संदेश।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।२।।

ॐ ह्रीं मसिकर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नष्ट धान्य के हो जाने पर, जीव दुखी फिर हुए विशेष ।
धान्य उगाओ मेहनत करके, 'कृषि कर्म' दीन्हा संदेश ।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।३।।

ॐ ह्रीं कृषि कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वस्तू अदल बदल कर विनिमय, देशान्तर से करो विशेष।
प्रभु 'वाणिज्य कर्म' का दीन्हे, जग जीवों को भी संदेश।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।४।।

ॐ ह्रीं वाणिज्य कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भाँति-भाँति की 'कला' सिखाए, भवि जीवों को प्रभु विशेष।
करो आजीविका इससे प्राणी, दीन्हें जग को यह सन्देश।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।५।।

ॐ ह्रीं कला कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रर्वतक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

काष्ठ धातु पाषाणादि में, 'शिल्प कला' का दे संदेश।
जग जीवों को ज्ञान सिखाए, जीवन चर्या के अवशेष ।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।६।।

ॐ ह्रीं शिल्प कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का दीन्हें प्रभु संदेश।
जीवन जीने को जीवों ने, हेतु पाए अन्य विशेष।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं षट्कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(द्वितीय वलयः)

दोहा– द्वादश तप पाए प्रभू, आदिनाथ जिनराज।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, शिव पद पाने आज।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्त शरण में आकर के प्रभु, करते उर से आह्वानन।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(शम्भू छन्द)

जीत रहे जो सर्व कषाएँ, करते विषयों का संहार ।
क्षुधा वेदना जीत रहे हैं, चतुर्विधि त्यागें आहार।।
अनशन तप का पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वन्दन, करके हम करते गुणगान।।१।।

ॐ ह्रीं अनशन तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भूख से कम आधा चौथाई, एक ग्रास लेते आहार।
उत्तम मध्यम जघन्य रूप से, होता है जो तीन प्रकार।।
ऊनोदर तप पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान।
आदिनाथ के पद में वन्दन, करके हम करते गुणगान॥ २।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चर्या को आहार हेतु जो, व्रत संख्यान करके जावें।
लाभालाभ में तोष रोष नहिं, साम्य भाव मन में पावें।।

व्रत परिसंख्यान पालते हैं, तप कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगान ॥ ३।।

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कभी एक दो तीन रसों का, छोड़-छोड़ करते आहार।
कभी चार रस कभी पाँच का, कभी छोड़ते सर्व प्रकार।।
रस परित्याग का पालन करते , तप कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगान ॥ ४।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनाशक्त रहते विविक्त जो, शैयाशन से तप करते ।
शान्त भाव से रहते हैं जो, बाधाओं से नहिं डरते ।।
विविक्त शैय्याशन पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगान ॥ ५।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैयाशन तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन से रहा ममत्व भाव जो, धीरे-धीरे छोड़ रहे।
आत्म ध्यान में रत रह करके, निज से नाता जोड़ रहे।।
कायोत्सर्ग तप पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगान ॥ ६।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गमनागमन आदि चर्या में, हो प्रमाद से प्राणी घात।
लेते हैं प्रायश्चित स्वयं ही, करते दोषों का संघात ।।
प्रायश्चित तप पालन करते, करते कर्मों का खण्डन ।
आदिनाथ प्रभु के चरणों में, करते हम शत्-शत् वन्दन।।७।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चारित्र रूप है, और विनय उपचार कहा।
यथा योग्य आदर करना ही, इनका विनयाचार रहा ।।
विनय सु तप का पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वन्दन, करके हम करते गुणगान।।८।।

ॐ ह्रीं विनय तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

करें साधना अपनी उसमें, कोई भी बाधा आवे ।
दूर करें निस्वार्थ भाव से , वैयावृत्ती कहलावे ।।
वैयावृत्ती सुतप पालते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगान ॥ ९ ।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्ति तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुबह शाम दिन रात निरन्तर, स्वाध्याय में रहते लीन ।
वाचना पृच्छना अरु अनुप्रेक्षा, आम्नाय उपदेश प्रवीन ।।
स्वाध्याय तप पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगान ॥ १० ।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होवे यदि उपसर्ग परीषह, शांत भाव से सहते हैं ।
आत्म ध्यान में लीन रहें नित, मोह त्याग कर रहते हैं।।
व्युत्सर्ग तप पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगान ॥ ११ ।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चिंतन मनन ध्यान जप में जो, रहते हैं निशदिन लवलीन।
आत्म ध्यान नित करें भाव से, होते सम्यक् ज्ञान प्रवीन।।
ध्यान सुतप का पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान्।
आदिनाथ के पद में वंदन, करके हम करते गुणगान ॥ १२ ।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वादश तप को तपने वाले, करते कर्मों का संहार ।
केवल ज्ञान प्रकट करते फिर, सारे जग में अपरम्पार ।।
आदि प्रभु ने संयम धारण, करके किया आत्म कल्याण ।
शीश झुका हम वन्दन करते, रत्नत्रय का दो प्रभु दान ।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(तृतीय वलयः)

दोहा : सोलह कारण भावना, प्रतिहार्य के अर्घ्य।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने सुपद अनर्घ ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

स्थापना

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्त शरण में आकर के प्रभु, करते उर से आह्वानन।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ प्रहाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

विष्णु पद छन्द

सप्त तत्त्व छह द्रव्य गुणों में, श्रद्धा उर धरना।
मिथ्या भाव छोड़कर सम्यक् रुचि प्राप्त करना ।।
शंकादि दोषों को तजकर, भेद ज्ञान पाना ।
दरश विशुद्धि गुणीजनों ने, या को ही माना ।।
तीर्थंकर पद पाने हेतू, श्री जिन को ध्याते ।
भव्य भावना भाते है हम, चरणों सिर नाते ।।१ ।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उच्च गोत्र का कारण बन्धू, मृदुल भाव गाया।
पुण्य पुरुष होता है जिसने, विनय भाव पाया।।
विशद विनय सम्पन्न भावना, भाव सहित गाये।
तीर्थंकर सा पद पाकर के, सिद्ध शिला जाये ।।
तीर्थंकर पद पाने हेतू...।।२ ।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नता भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कृत कारित अरु अनुमोदन से, मन-वच-तन द्वारा।
नव कोटी से शील व्रतों का, पालन हो प्यारा।।
सोलहकारण शुभम् भावना, भाव सहित भावे।
अनतिचार व्रत शील से अपना, जीवन महकावे।।
तीर्थंकर पद पाने हेतू, श्री जिन को ध्याते ।
भव्य भावना भाते है हम, चरणों सिर नाते।।३।।

ॐ ह्रीं अनतिचार भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अजर अमर पद पाने हेतू, ज्ञानामृत पाना।
ॐकार मय जिनवाणी के, छन्दों को गाना।।
ज्ञान योग होता अभीक्ष्ण यह, भावों से ध्याना।
'विशद' ज्ञान के द्वारा भाई, शिवपुर को पाना।।
तीर्थंकर पद पाने हेतू...।।४।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण को, सम्यक् धर्म कहा।
मोक्ष महल का सम्यक् साधन, अनुपम यही रहा।।
धर्म और उसके फल में जो, हर्ष भाव आवे।
सु संवेग भाव शास्त्रों में, ये ही कहलावे।।
तीर्थंकर पद पाने हेतू...।।५।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पल-पल करके नर जीवन का, समय निकल जाता।
इन्द्रियरोध किये बिन भाई, मिले ना सुख साता।।
इच्छाओं का दमन करे फिर, महामंत्र जपना।
यथा शक्ति तप करना भाई, शक्तिसः तपना ।।
तीर्थंकर पद पाने हेतू...।।६।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पर परिणत से बचकर हमको, निज निधि को पाना।
छोड़ विकल्पों को अब सारे, निज को ही ध्याना।।

यथाशक्ति जो त्याग करे वह, मोक्ष मार्ग जानो।
जैनागम में त्याग शक्तिसः, इसी तरह मानो।।
तीर्थंकर पद पाने हेतू...।।७।।

ॐ ह्रीं शक्तिस्तस्त्याग भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जन्म मरण होता है तन का, चेतन है ज्ञाता।
कर्म करेगा जैसा प्राणी, वैसा फल पाता।।
चेतन का ना अंत है कोई, ना ही आदी है।
श्रेष्ठ मरण औ सत् अनुभूति, साधु समाधि है।।
यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाएँ।।८।।

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधक करे साधना अपनी, संयम के द्वारा।
रत्नत्रय अपने जीवन से, जिनको है प्यारा ।।
विघ्न साधना में कोई भी, उनकी आ जावे ।
वैय्यावृत्ति विघ्न दूर, करना ही कहलावे ।।
यही भावना भाते है...।।९।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ती भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अर्हत् होते हैं इस जग में, सद्गुण के दाता ।
अतः सार्व कहलाए भगवन्, भविजन के त्राता।।
हो अनुराग गुणों में उनके, भाव सहित भाई।
अर्हत् भक्ति गुणी जनों ने, इसी तरह गाई ।।
यही भावना भाते हैं हम...।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हद् भक्ति भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सत् संयम की इच्छा करके, गुरु के गुण गाते।
भाव सहित वंदन करने को, चरणों में जाते ।।
गुरु चरणों की भक्ती जग में, होती सुख दानी।
गुणियों ने आचार्य भक्ती शुभ, इसी तरह मानी।।
यही भावना भाते हैं हम...।।११।।

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

करते है उपदेश धर्म का, जो मंगलकारी।
संत दिगम्बर और निरम्बर, नीरस आहारी।।
उपाध्याय को जग भोगों से, पूर्ण विरक्ती है।
भाव सहित गुण गाना उनकी, बहुश्रुत भक्ती है ।।
यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाए।।१२।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत (उपाध्याय)भक्ति भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्त तत्त्व झंकृत होते हैं, जिनवाणी द्वारा।
दिव्य देशना निःसृत होती, जैसे जलधारा।।
जिस वाणी से जागृत होवे, चेतन शक्ती है।
विशद ज्ञान में वर्णित पावन, प्रवचन भक्ती है।।
यही भावना भाते हैं हम...।।१३।।

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ति भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते क्या कर्त्तव्य हमारे, उनको पाना है।
व्रत संयम से जीवन अपना, हमें सजाना है।।
कर्त्तव्यों के पालन हेतू, भावों से भरना ।
आवश्यकाऽपरिहार भावना, सम्पूरण करना ।।
यही भावना भाते हैं हम...।।१४।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहारिणी भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

महिमा अगम है जिन शासन की, कैसे उसे कहें।
संयम तप श्रद्धा भक्ती में, हर पल मगन रहें।।
मोक्ष मार्ग औ जैन धर्म की, महिमा जो गाई।
पथ प्रभावना सत् संतों ने, जग में फैलाई।।
यही भावना भाते हैं हम...।।१५।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वेष भाव के द्वारा हमने, कितने कष्ट सहे।
मद माया की लपटों में हम, जलते सदा रहे।।
सदियाँ गुजर गयी हैं लेकिन, धर्म नहीं पाया।
चेतन की यह भूल रही, अरु रही मोह माया।।
यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाए।।१६।।

ॐ ह्रीं प्रवचन वत्सलत्व भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

प्रातिहार्य है शोक निवारी, तरु अशोक कहलाता है।
रत्नों से सज्जित है अनुपम, सबके मन को भाता है।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होता अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।१७।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत् प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इन्द्र पुष्प वृष्टी करते हैं, समवशरण में अतिशयकार।
मन मोहक शुभ गंध फैलती, चतुर्दिशा में विस्मयकार।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होता अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।१८।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रभु की दिव्य देशना अनुपम, सब भाषा मय मंगलकार ।
ॐकार मय प्रहसित होती, चतुर्दिशा में बारम्बार।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होता अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।१९।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढौरते अतिशय, यक्ष खड़े हो द्वार महान्।
अतिशय महिमा दिखलाते हैं, नमन् करें करके गुणगान।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होता अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।२०।।

ॐ ह्रीं चँवर प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रत्न जड़ित सिंहासन सुन्दर, मन को मोहित करे अहा।
अधर विराजें जिस परश्री जिन, जैनागम में यही कहा।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होता अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।२१।।

ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भामण्डल की महिमा अनुपम, अतिशय कारी रही महान।
सप्त भवों की दिग्दर्शक है, जिसका कौन करे गुणगान।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होता अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।२२।।

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मन को आह्लादित करती है, देव दुन्दुभि अतिशयकार।
करती है गुणगान प्रभू का, जड़ होकर भी श्रेष्ठ अपार।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होता अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।२३।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभि प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दर्शाते छत्रत्रय प्रभुता, श्री जिनेन्द्र की महिमावन्त।
तीन लोक के अधिनायक प्रभु, तीर्थंकर हैं ये भगवंत।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होता अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।२४।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भव्य भावना सोलह कारण, भव्य जीव जो भाते हैं।
केवल ज्ञान प्राप्त करते, वे प्रातिहार्य प्रगटाते हैं।।
समोवशरण की रचना करते, इन्द्र सभी मिल अपरम्पार।
चरण वन्दना करते हैं सब, 'विशद' भाव से बारम्बार।।

ॐ ह्रीं सोलह कारण भावना अष्ट प्रातिहार्य प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(चतुर्थ वलयः)

दोहा – णमो जिणाणं आदि, ऋषिवर पावें ऋद्धियाँ।
पाने मरण समाधि, पुष्पाञ्जलि करते विशद।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

स्थापना

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्त शरण में आकर के प्रभु, करते उर से आह्वानन।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(शम्भू छन्द)

'णमो जिणाणं' श्री जिनेन्द्र को, विशद भाव से करूँ नमन्।
केवल ज्ञान ऋद्धि के धारी, श्री जिनेन्द्र को शत् वन्दन।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो ओहि जिणाणं' कहकर, अवधि ज्ञान का करूँ मनन।
अवधि ज्ञान के धारी मुनिवर, के चरणों में हो वन्दन।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं णमो ओहि जिणाणं ऋद्धि धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहकर 'णमो परमोहि जिणाणं', परमावधि का होय यतन।
परम साधना करने वाले, मुनि के चरणों में वन्दन।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।३।।
ॐ ह्रीं णमो परमोहि जिणाणं ऋद्धि धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बोल 'णमो सव्वोहि जिणाणं' सर्वावधि पाये जो ज्ञान ।
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, सर्व लोक में रहे महान् ।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।४।।
ॐ ह्रीं णमो सव्वोहि जिणाणं ऋद्धि धारक आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो अणंतोहि जिणाणं', की महिमा है अपरम्पार।
श्रेष्ठ ज्ञान धारी मुनि पद में, वन्दन मेरा बारम्बार।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।५।।
ॐ ह्रीं णमो अणंतोहि जिणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो कोट्ठ बुद्धीणं' पद से, कोट्ठ बुद्धि धारी जिन संत।
उनके चरणों में वन्दन कर, हो जाए कर्मों का अंत।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।६।।
ॐ ह्रीं णमो कोट्ठ बुद्धीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो बीज बुद्धीणं' पद में, बीज बुद्धि ऋद्धी धारी।
श्रेष्ठ साधना करते मुनिवर, मन से होकर अविकारी।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।७।।
ॐ ह्रीं णमो बीज बुद्धीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो पादाणुसारीणं' पादाणु सारिणी ऋद्धिवान ।
तप बल से यह ऋद्धि पाते, स्वयं जगाते हैं उपमान।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।८।।
ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो संभिन्न सोदारणं', सभिन्न श्रोतृत्व के धारी ।
उनके चरणों वन्दन करते, हम भी होकर अविकारी ।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।९।।
ॐ ह्रीं णमो संभिन्न सोदारणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो सयं बुद्धीणं' कहकर, स्वयंबुद्ध ऋद्धी धारी।
मुनिवर के चरणों में वन्दन, करते हम मंगलकारी।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१०।।
ॐ ह्रीं णमो सयं बुद्धीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो पत्तेय बुद्धीणं' कहकर, प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि पाऊँ।
श्रेष्ठ साधना करूँ भाव से, मोक्ष महल को मैं जाऊँ।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।११।।
ॐ ह्रीं णमो पत्तेय बुद्धीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो बोहिय बुद्धीणं' कहते, बोधी पाने हेतु महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उनका हम करते गुणगान ।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१२।।
ॐ ह्रीं णमो बोहिय बुद्धीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो उजु मदीणं' कहके, ऋजु मति मनःपर्यय ज्ञान।
परम साधना करने वाले, पा जाते है सम्यक् ज्ञान।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१३।।

ॐ ह्रीं णमो उजु मदीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहके 'णमो विउल मदीणं', विपुल मति पा लेते ज्ञान।
आतम ध्यान लगाने वाले, पा जाते हैं केवल ज्ञान।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१४।।

ॐ ह्रीं णमो विउल मदीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो दश पुव्वीणं' कह, दश पूर्वों का पाऊँ ज्ञान।
विशद भाव से जिन मुद्रा का, करता रहूँ नित्य मैं ध्यान।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१५।।

ॐ ह्रीं णमो दश पुव्वीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो चउदश पुव्वीणं', चौदह पूर्वों के धारी।
मुनिवर की शुभ करें वन्दना, होकर हम भी अविकारी।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१६।।

ॐ ह्रीं णमो चउदश पुव्वीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(सोरठा)

णमो अट्ठंग महा, निमित्त कुसलाणं जानिए।
महा निमित्तक ज्ञान, मुनिवर पाते मानिए।।

करते हैं कर जोर, वन्दन उनके चरण में।
होके भाव विभोर, शिव पद पाने के लिए।।१७।।

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंग महानिमित्त कुसलाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चाल टप्पा)

णमो विउव्व इड्ढि पत्ताणं, ऋद्धिधर स्वामी।
ऋद्धि सिद्धि का दान हमें दो, मुक्ती पथ गामी।।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी!
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।।१८।।

ॐ ह्रीं णमो विउव्व इड्ढि पत्ताणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ध्याउँ 'णमो विज्जाहराणं', ऋद्धि महा नामी।
इसको पाने वाला बनता, मुक्ती पथ गामी।।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी!
सम्यक्तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी मुनि।।१९।।

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो चारणाणं' ऋद्धीधर, हैं त्रिभुवन नामी।
उनकी भक्ती करने वाला, हो उसका स्वामी।।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी!
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।।२०।।

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो पण्ण समणाणं' जानो, मुक्ती पथ गामी।
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि के धारी, हैं त्रिभुवन नामी।।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी!
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।।२१।।

ॐ ह्रीं णमो पण्ण समणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो आगास गामीणं' वाले, ऋद्धी के स्वामी।
गगन गमन करते है भाई, मुक्ती पथगामी।।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी !
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।। २२।।
ॐ ह्रीं णमो आगास गामीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो आसी विसाणं' ऋद्धी, मुनिवर ने पाई।
श्रेष्ठ ऋद्धि को धार गुरू ने, प्रभुता दिखलाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।। २३।।
ॐ ह्रीं णमो आसी विसाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो दिट्ठी विसाणं' ऋद्धी, मुनिवर ने पाई।
मरण देखते होय जीव का, देखें न भाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।। २४।।
ॐ ह्रीं णमो दिट्ठी विसाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो उग्ग तवाणं' जानो, ऋद्धि यह भाई।
उग्र तपों को पाते मुनिवर, यह ऋद्धि पाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।। २५।।
ॐ ह्रीं णमो उग्ग तवाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो दित्त तवाणं' ऋद्धी से, मुनीवर भाई।
दीप्त तपो को अतिशय तपते, मुनिवर सुखदायी।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।। २६।।
ॐ ह्रीं णमो दित्त तवाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो तत्त तवाणं' ऋद्धी, से ऋषिवर भाई।
कठिन-कठिन तप करके मुनिवर, अतिशय दिखलाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।। २७।।
ॐ ह्रीं णमो तत्त तवाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो महा तवाणं' ऋद्धि, पाकर के भाई।
उत्तम से उत्तम तप तपते, हैं ऋषि सुखदायी।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।। २८।।
ॐ ह्रीं णमो महा तवाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर तवाणं' ऋद्धी, ऋषिवर जो पाई।
घोर परीषह सहकर भी मुनि, तप करते भाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।। २९।।
ॐ ह्रीं णमो घोर महा तवाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर गुणाणं' जानो, ऋद्धी सुखदायी।
श्रेष्ठ गुणों को पाते ऋषिवर, ऋद्धी यह पाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।। ३०।।
ॐ ह्रीं घोर गुणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर परक्कमाणं' यह, ऋद्धि सुखदायी।
घोर पराक्रम पाते मुनिवर, यह ऋद्धी पाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।। ३१।।
ॐ ह्रीं णमो घोर परक्कमाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर गुण बंभयारीणं', ऋद्धीधर भाई।
घोर ब्रह्मचर्य पालन करते, अतिशय सुखदायी ।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी-मुनि...।।३२।।

ॐ ह्रीं णमो घोर गुण बंभयारीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चाल-छन्द

'णमो आमोसहि पत्ताणं' बोल बोल मैटो सब गम।
आमर्षौषधि के धारी, ऋषिवर जग में उपकारी।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।। ३३ ।।

ॐ ह्रीं णमो आमोसहि पत्ताणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो खेल्लोसहि पत्ताणं', ऋद्धि पाकर मैटो गम।
थूक लार मुख के न्यारे, रोग नशाते हैं सारे।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।। ३४ ।।

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो जल्लोसहि पत्ताणं' मोह त्याग कर धारो सम।
ऋषि के तन का जल्ल अहा, रोग मैटता पूर्ण रहा।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।। ३५ ।।

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहि पत्ताणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो विप्पोसहि पत्ताणं', ऋद्धि होती है सक्षम।
मल औषधि बन जाता है, सारे रोग नशाता है।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।।३६ ।।

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहि पत्ताणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो सव्वोसहि पत्ताणं' पाते हैं जो धारे यम।
सर्वौषधि ऋद्धी धारी, व्याधि मैटते है सारी।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।। ३७ ।।

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहि पत्ताणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शेर -छन्द

'णमो मण बलीणं' यह, ऋद्धि पाए हैं।
मन बल से श्रेष्ठ ऋद्धी, ऋषिवर जगाए हैं।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ।। ३८ ।।

ॐ ह्रीं णमो मण बलीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो वचि बलीणं', यह ऋद्धि जानिए।
वचनों में शक्ति मिलती, ऋषि की ये मानिए ।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ।। ३९ ।।

ॐ ह्रीं णमो वचि बलीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो काय बलीणं', इस ऋद्धि के धनी।
पाते हैं मुनि शक्ती, ऋद्धि से अति धनी।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ।।४०।।

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो खीर सवीणं', यह ऋद्धि जो पाए।
रुखा आहार कर में, शुभ क्षीर सा बनाए।।

ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।४१।।

ॐ ह्रीं णमो खीर सवीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो सप्पि सवीणं', इस ऋद्धि के धारी ।
रुखा आहार पाते, शुभ घृत सम भारी ।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।४२।।

ॐ ह्रीं णमो सप्पि सवीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो महुर सवीणं' यह ऋद्धि जानिए।
मधुर आहार रुक्ष भी, हो जाए मानिए।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।४३।।

ॐ ह्रीं णमो महुर सवीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो अमिय सवीणं', यह ऋद्धि पाए हैं।
आहार रुक्ष अमृत, जैसा बनाए हैं।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।४४।।

ॐ ह्रीं णमो अमिय सवीणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शंभू -छन्द

'णमो अक्खीण महाणसाणं', ऋद्धी है अतिशयकारी।
कमें नहीं आहार जहाँ पर, भोजन लेवें अनगारी।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।४५।।

ॐ ह्रीं णमो अक्खीण महाणसाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो बड्ढमाणाणं' यह, ऋद्धि मुनिवर ने पाई।
केवल ज्ञान प्राप्त होने तक, ऋद्धि बढ़ती सुखदायी।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।४६।।

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो सिद्धायदणाणं' यह, ऋद्धि ऋषिवर जी पाते ।
सिद्धायतन के दर्शन मुनि को, बैठे-बैठे हो जाते।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।४७।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धायदणाणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो भयवदोमहदि महावीर बड्ढमाण', बुद्ध ऋषि जानो।
वर्द्धमान महावीर प्रभु सम, बन जाते हैं ऋषि मानो।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।४८।।

ॐ ह्रीं णमो भयवदोमहदि महावीर बड्ढमाण बुद्ध रिसीणो ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गणधर वलय में णमो जिणाणं, आदि ऋद्धियाँ कहीं महान्।
अड़तालिस यह मंत्र श्रेष्ठ हैं, भाव सहित कीन्हा गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।
मुक्ती पद को प्राप्त करें हम, किया भाव से यह अर्चन।।

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं आदि ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री ऋषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

समुच्चय जयमाला

धर्म प्रवर्तक आदि जिन, मैटे भव का जाल।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य के, हेतु कहूँ जयमाल।।

(चौपाई छन्द)

लोकालोक अनन्त बताया, जिनवाणी में ऐसा गाया।
तीन लोक उसमें शुभ गाए, ऊर्ध्व अधो अरु मध्य बताए।।१।।
मध्य लोक उसका शुभ जानो, मध्य में जम्बूद्वीप बखानो।
उसमें भरत क्षेत्र शुभ गाया, धनुषाकार जिसे बतलाया।।२।।
छह खण्डों में बँटा है भाई, पञ्च म्लेच्छ खण्ड दुखदाई।
आर्य खण्ड उसका शुभ जानो, मध्य में उसको तुम पहिचानो।।३।।
परिवर्तन उसमें बतलाया, उत्सर्पिणी अवसर्पिणी गाया।
अति दुखमादि काल बताए, छह संख्या में जो कहलाए।।४।।
अवसर्पिणी यह काल कहा है, हीन हीनता रूप रहा है।
बल बुद्धि वैभव घट जाए, फिर भी मानव मान बढ़ाए।।५।।
सुषमा दुषमा भाई गाया, तृतीय काल जिसे बतलाया।
एक लाख पूरव की जानो, तीन वर्ष वसु माह बखानो।।६।।
पन्द्रह दिन इस काल के जानो, शेष काल के भाई मानो।
सर्वार्थ सिद्धी से चय कीन्हें, नगर अयोध्या जन्म जो लीन्हें।।७।।
नाभिराय के भाग्य जगाये, मरुदेवी को धन्य बनाये।
देवों ने उत्सव कर भारी, पूजा कीन्ही अतिशयकारी।।८।।
पद युवराज आपने पाया, लोगों ने तब हर्ष मनाया।
हुई कल्पवृक्षों की हानि, व्याकुल हुए जगत् के प्राणी।।९।।
भूख प्यास ने उन्हें सताया, लोगों ने उत्पात मचाया।
रोते गाते चरणों आये, प्रभु से अपनी अर्ज सुनाए।।१०।।

प्रभु ने तब षट् कर्म बताए, प्राणी पाकर नाचे गाये।
आजीविका पाकर हर्षाए, जीवन सुखमय सभी बिताए।।११।।
हुआ स्वयंवर उनका भाई, विधि सभी ने यह अपनाई।
लाख तिरासी पूरव जानो, भोग में बीती उनकी मानो।।१२।।
नीलाञ्जना ने मरण को पाया, प्रभु ने तब वैराग्य जगाया।
धर्म प्रर्वतक प्रभु कहलाये, मुक्ति का शुभ मार्ग दिखाए।।१३।।
प्रभु ने रत्नत्रय को पाया, कई राजाओं ने अपनाया।
छह महिने का ध्यान लगाया, निज आतम को प्रभु ने ध्याया।।१४।।
सुविधि दान की प्रभू बताए, नृप श्रेयांश के भाग्य जगाए।
तीज शुक्ल वैशाख की पाई, अक्षय तृतिया जो कहलाई।।१५।।
प्रभु ने अतिशय ध्यान लगाया, क्षण में केवल ज्ञान जगाया।
समवशरण तब देव बनाए, प्रभु की दिव्य देशना पाए।।१६।।
मुक्ति पद को प्रभु ने पाया, सारे जग को मार्ग दिखाया।
हम भी यही भावना भाते, प्रभु पद सादर शीश झुकाते।।१७।।
जग में भ्रमण किया है भारी, अब आयी मुक्ती की बारी।
मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, कर्म नाशकर मुक्ति पाएँ।।१८।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय संयमधारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
जय ज्ञान पुजारी अतिशयकारी, धर्म प्रवर्तक शिवकारी।।

ॐ ह्रीं धर्म प्रर्वतक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

अडिल्य छन्द

प्रथम जिनेश्वर आप हुए यह जानिए।
मोक्ष मार्ग की राह बताए मानिए।।
भव भोगों की नहीं है मन चाहना।
विशद मोक्ष पद पाएँ है यह भावना ।।

(इत्याशीर्वाद : पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार।।
वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।।1।।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।।2।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।।3।।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।4।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।।5।।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।6।।
चिह्न बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।।7।।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।।8।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।।9।।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।।10।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।।11।।
हुईं पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।।12।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई।।13।।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।।14।।
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।।15।।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी।।16।।
उसने युक्ती एक लगाई, देवी नृत्यु हेतु बुलवाई।।17।।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।।18।।
दृश्य प्रभू के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।।19।।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।।20।।

छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।।21।।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई।।22।।
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।।23।।
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।।24।।
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।।25।।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया।।26।।
पञ्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।।27।।
प्रभुजी केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।28।।
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभू सुनाए।।29।।
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए।।30।।
माघ बदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए।।31।।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया।।32।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।।33।।
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।।34।।
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।।35।।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।36।।
जगह-जगह प्रतिभाएँ सोहें, भविजीवों के मन को मोहें।।37।।
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी।।38।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।।39।।
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।40।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावे भव से पार।।
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्।।

***

आरती

तर्ज : आज करें हम .....

आज करें हम विशद भाव से, आरती मंगलकारी।
मणिमय दीपक लेकर आये, आदिनाथ दरबार।।
हो जिनवर-हम सब उतारें मंगल आरती।टेक।

जन्म प्राप्त कर नगर अयोध्या, को प्रभु धन्य बनाया।
नाभिराय राजा मरुदेवी, ने सौभाग्य जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारें मंगल आरती।।1।।

षट् कर्मों की शिक्षा देकर, सबके भाग्य जगाए।
नर-नारी सब नाचे गाये, जय-जयकार लगाए।।
हो जिनवर-हम सब उतारें मंगल आरती।।2।।

रत्नत्रय पाकर हे स्वामी!, मोक्ष मार्ग अपनाया।
आतम ध्यान लगाकर तुमने, केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारें मंगल आरती।।3।।

यही भावना भाते हैं हम, तव पदवी को पावें।
मोक्ष प्राप्त न होवे जब तक, शरण आपकी आवें।।
हो जिनवर-हम सब उतारें मंगल आरती।।4।।

अतिशय पुण्यवान प्राणी ही, दर्श आपका पाते।
'विशद' आरती करने वाले, बिगड़े भाग्य बनाते।।
हो जिनवर-हम सब उतारें मंगल आरती।।5।।

***

प्रशस्ति

लोकालोक रहा मनहार, महिमा जिसकी अपरम्पार।
मध्यलोक में जम्बूदीप, मध्य सुमेरू रहा समीप।।१।।

भरत क्षेत्र है दक्षिण भाग, आर्य खण्ड है एक विभाग।
उसमें भारत देश महान, प्रान्त है जिसमें राजस्थान।।२।।

टोंक जिला में है यह ग्राम, रहा बनेठा जिसका नाम।
मन्दिर जहाँ बने हैं तीन, श्रावक ज्ञानी रहे प्रवीण ।।३।।

चन्द्र प्रभु मन्दिर के पास, जैनों का शुभ रहा निवास।
श्रावक के गृह हैं बत्तीस, अग्रवाल जैनी उन्नीस।।४।।

खण्डेलवाल रहे हैं शेष, सभी धार्मिक रहे विशेष।
चन्द्र प्रभु अरू नेमिनाथ, महावीर प्रभु जानो साथ।।५।।

अतिशय तीनों हुए विधान, जिनकी रही निराली शान।
चार दिनों का रहा प्रवास, जैन भवन में कीन्हा वास।।६।।

माघ कृष्ण बारस की शाम, लेखन से कीन्हा विश्राम।
आदिनाथ का लिखा विधान, जिसकी महिमा रही महान।।७।।

रही भावना मन में एक, पुण्य कमावें प्राणी नेक।
जैन धर्म का पावें योग, धर्म ध्यान का हो संयोग।।८।।

शुभ उपयोग हमारा होय, नहीं अशुभ क्षण जावे कोय।
ज्ञान ध्यान में बीते काल, अतः कलम को लिया सम्हाल।।९।।

यही भावना मेरी खास, रत्नत्रय का होय विकास।
विशद ज्ञान का होय प्रकाश, सिद्ध शिला पर होय निवास।।१०।।

ज्ञानी पण्डित नहीं महान, लघ्वाचार नहीं कुछ ज्ञान।
अक्षर मात्रा की हो भूल, करें सभी ज्ञानी निर्मूल।।११।।

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय ,सर्व साधु के चरण नमन्।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैनधर्म को शत् वंदन।।
सोलहकारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नंदीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद'भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रय योग से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं श्री अरंहत,सिद्ध,आचार्य,उपाध्याय,सर्व साधु,सरस्वती देव्यै,सोलहकारण भावना,दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित, कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय,नंदीश्वर,पंचमेरु,चैत्य-चैत्यालय,कैलाशगिरि,चंपापुर,गिरनार,पावापुर, सम्मेद शिखर आदि,निर्वाण क्षेत्र, तीस चौबीसी,तीन कम नौ करोड गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति।

पुष्प क्षेपण करते हुए शांतिपाठ बोले..........

शांति पाठ

शांतिनाथ शांती के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।1।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।2।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।3।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।4।।
जैनधर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।5।।

शान्तये शांतिधारा.....3, पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विर्सजन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अंजान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद,क्षमा करो भगवान।।1।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।2।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विर्सजन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।3।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष।।

******

आचार्योपाध्याय-सर्वसाधु का अर्घ्य

रत्नत्रय के धारी पावन, शिवपथ के राही अनगार।
विषयाशा के त्यागी साधू, तीन लोक में मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

****

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकार लाए है।
महाव्रतों को धारण कर ले, मन में भाव बनाए है।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ्य समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें हम गुरु चरणों में सिर धरते है।।

ॐ ह्रूं परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

स्थापना

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते है उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

ज्ञानोदय छन्द

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणीं से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥ १॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नी से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥ २॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥ ३॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥ ४॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादी से हे गुरुवर!, क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं॥ ५॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फँसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥ ६॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आयें हैं॥ ७॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥ ८॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर!, थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥ ९॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

तार्टंक छन्द

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित हैं जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥१॥

जिला-छतरपुर कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥२॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतू, अपने घर से निकल पड़े॥३॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥४॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा॥५॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥६॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥७॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥८॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥९॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥१०॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥११॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥१२॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

ब्र. आस्था दीदी (संघस्थ)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज : माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन.....4 मुनिवर के ......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अंहिसा महाव्रती की..2, महिमा कही न जावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन.....4 मुनिवर के ......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।
जग की माया को लखकर के..2 मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन.....4 मुनिवर के ......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।
गुरु की भक्ति करने वाला..2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन.....4 मुनिवर के ......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे
आशीर्वाद हमें दो स्वामी...2 अनुगामी बन जावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन...4 मुनिवर के ...जय .. जय...

इत्याशीर्वाद

श्रीमती इंदु गुप्ता

कृति	-	आदि धर्म प्रवर्तक, चमत्कारक श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
कृतिकार	-	प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	-	सप्तम, 2026
प्रतियाँ	-	1000
संकलन	-	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज मुनि श्री 108 विभोरसागर जी महाराज मुनि श्री विलक्ष्य सागर जी महाराज मुनि श्री विपिन सागर जी महाराज
सहयोग	-	आर्यिका श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती
संपादन	-	ब्र. आस्था दीदी 9660996425
संयोजन	-	ब्र. प्रदीप भैया 7868840873
प्राप्ति स्थल	-	1. सुरेश जैन सेठी, शांतिनगर 9413336017 जयपुर 2. हरीश जैन दिल्ली 9136248971 3. श्री दि. जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी रेवाड़ी 09416882301 4. नीरज जैन लखनऊ 9451251308 5. राजेश जैन खाकरोट वाले अंजनीनगर इंदौर 9425316972

पुनः प्रकाशन हेतु - 100/-

पुण्यार्जक कर्ता
श्रीमती विमला देवी (धर्मपत्नी स्व. श्री ताराचन्द जी जैन)
श्री ओमप्रकाश, अशोककुमार, राजेशकुमार, ज्ञानचन्द
शैलेन्द्र, अभिषेक, वंशकुमार जैन
सीतारामपुरा वाले, मो. 9928587128